कविता का अनुवाद और चुनौतियां

सोनाली मिश्रा

आज के डिजिटल युग में अनुवाद न केवल दुनिया के दो छोरों को समझने के लिए आवश्यक है बल्कि यह बाज़ार के लिए भी उतना भी आवश्यक है। आज दुनिया जहाँ एक बड़े बाज़ार में बदल गयी है। अनुवाद दूसरे देशों की संस्कृति को पहचान कर, समझ कर उसी के अनुसार उत्पाद बनाने की या संशोधित करने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। मगर इसमें साहित्य का अनुवाद? क्या साहित्य के अनुवाद को उसी तरीके से देखा जा सकता है? साहित्य का अनुवाद बाज़ार के अनुवाद से किस प्रकार भिन्न है? यदि कहा जाए कि आज के डिजिटल युग में साहित्य के अनुवाद को व्यावसायिक अनुवाद के समान ही महत्ता मिलने लगी है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। अनुवाद और बाज़ार और साहित्य के बीच के सम्बन्धों को औपनिवेशिक वर्चस्व के विभिन्न मोर्चों से देखा जा सकता है।

अनुवाद की महत्ता जहाँ एक तरफ स्पष्ट है वहीं कविता के अनुवाद की बात करें तो पाएंगे कि साहित्य की यह विधा जितनी ख़ास है जितनी विशिष्ट है, उसका अनुवाद उतना ही कठिन और क्लिष्ट है। कविता के अनुवाद के विषय में जितने विचार रखे गए हैं उतने विचार संभवतया किसी भी और विधा के अनुवाद के विषय में नहीं रखे गए हैं। जितनी अद्भुत कविता की रचना प्रक्रिया होती है उतनी ही अद्भुत कविता के अनुवाद की रचना प्रक्रिया होती है। कविता के अनुवाद को पहले तो विद्वानों ने खारिज ही कर दिया था, कविता के अनुवाद को असंभव की श्रेणी में रखा जाता है।

कविता के अनुवाद को इसलिए असंभव कहा जाता है क्योंकि कविता अपनी संरचना में विशिष्ट होती है। कविता एक सर्जन है, यह न केवल भावों का सृजन है बल्कि यह संवेदना और समानुभूति के स्तर पर रची गयी रचना होती है। आर जी कलिंगवुड ने अपनी पुस्तक कला के सिद्धांत में रचना और बनाना शब्दों का सूक्ष्म अंतर स्पष्ट किया है। उनके अनुसार "किसी वस्तु की रचना करने का अर्थ है उसे अतकनीकी रूप से, परन्तु फिर भी जानबूझ और स्वेच्छा से बनाना।"1

कहा जा सकता है कि कविता ऐसी विधा है जिसमें केवल एक ही तकनीक होती है और वह है भावों की तकनीक। भाव और संवेदना से भरी हुई होती है कविता। उसमें सृजन रचनात्मक होता है। रचना के लिए उसका भिन्न होना अनिवार्य है। कोई भी कवि अपने मन के भावों को काटता है, छांटता है, उसे तराशता है और फिर अंत में रचना के रूप में प्रस्तुत करता है। एक कवि अपने मन में उभरते हुए उदात्त भावों को रचता है। वह शब्दों को अलग अलग तरीके से प्रस्तुत करता है, वह एक ही वस्तु के लिए भिन्न भिन्न शब्दों का प्रयोग कर सकता है। वह आंचलिक शब्दों का प्रयोग करता है। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने कविता को लोक की भाषा में रचना कहा है। जब वह लोक से जुडी होती है तो तब वह अपने में तमाम तरह के सांस्कृतिक सन्दर्भ समेटे होती है। कवि नया रचता है, कवि पुराने सन्दर्भों को नए रूप में प्रस्तुत करता है।

इस नएपन में कथ्य हो सकता है, भाषा हो सकती है, यह नयापन कई स्तरों पर हो सकता है। कवि बिम्ब रचता है, रचनाकार बिम्बों और मुहावरों के माध्यम से बहुत कुछ कहता है। वह कम शब्दों में पूरे इतिहास को पुनर्रचित करने की क्षमता रखता है। कविता बहुत ही कम शब्दों में अपने समय के वृत्तांत को कहने में सफल होती है। कोई भी कविता इसी जगत के धरातल पर रची जाती है। वह उसी संसार का

I. *विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, कविता क्या है। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1999, पृ-22*

हिस्सा होती है, जिसे कवि देखता है, भोगता है और जिसमें वह अपने समय के सत्य को रच देता है।
हमारे देश में "साहित्य" और "काव्य" शब्द पर्याय रहे हैं। भारतीय मनीषियों ने साहित्य के लिए काव्य शब्द का प्रयोग किया है। भामह ने काव्य का लक्षण बताते हुए 'काव्यालंकार' में लिखा है – शब्दार्थो सहितौ काव्यम"
अर्थात शब्द और अर्थ के उचित सहभाव का नाम काव्य है। शब्द और अर्थ के समुचित सहभाव का तात्पर्य शब्द और अर्थ की उस उस संश्लिष्टात्मक स्थिति से है, जिसमें उपयुक्त शब्द से उपयुक्त और आह्लादकारी अर्थ की प्राप्ति हो।
भारतीय काव्यशास्त्र कविता को भाषा में कवि द्वारा रचा गया ललित स्थापत्य मानकर शास्त्रीय मानकों का निर्धारण करता है। यह द्रष्टिकोण शायद शास्त्रवादी प्रवृत्ति का प्रतिफल है। कविता भले ही नितांत वैयक्तिक और आत्मानुभूति से निर्देशित प्रक्रिया होती है पर जब उसके ढाँचे या स्वरुप की चर्चा करते हैं तो उसे एक वस्तु मानना पड़ेगा। भारतीय चिंतन की द्रष्टि में संगीत, चित्र, मूर्ति और स्थापत्य कलाएं अपने में वस्तु हैं जिनके निर्माण के लिए कतिपय बुनियादी आधारभूत तत्व हैं, जैसे चित्र के स्थापत्य ढाँचे के लिए रेखाएं, संगीत के लिए स्वरारोह, स्थापत्य के लिए दिशाओं का आंकलन। तो उसी प्रकार शब्द ढाँचे से कविता बनती है।
वहीं राजशेखर ने काव्य मीमांसा में काव्य के स्थान पर साहित्य शब्द का प्रयोग किया है
'साहित्य पंचमी विद्या"
शब्दार्थो: यथावत, सहभावेनम, साहित्य विद्या'
भर्तहरि के समय में काव्य को साहित्य का नाम दिया जा चुका था –
'साहित्य संगीत-कलाविहीन:'
वहीं काव्य की परिभाषा देते हुए कोलरिज का कहना है कि "poetry is the excitement of emotion for the purpose of immediate pleasure through the medium of beauty"
तो वहीं वर्डस्वर्थ कहते हैं: poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings"
इनके अनुसार कविता सामान्य व्याक्ति की भाषा, सामान्य व्यक्ति के जीवन से जुड़ी होनी चाहिए। जो जीवित है, जो स्पंदित होती है। कविता का पाठक भी रक्त और माँस के सजीव स्पर्श में रहे, वहीं शैली ने कविता को सभ्यता के संस्कार के लिए आवश्यक बताया। शेली ने कवि को विश्व का सबसे अस्वीकृत विधायक और मसीहा की संज्ञा दी है। उन्होंने कहा "poets are the unacknowledged legislators of the world" तो कीट्स के अनुसार कविता भावों की भावात्मक अभिव्यक्ति है। अगर मैथ्यू आर्नोल्ड, इलियट और क्रोचें की भी परिभाषाओं को देखें तो यही निकल कर सामने आता है कि कविता मानवीय द्रष्टिकोण से परिपूर्ण होनी चाहिए, और कविता में सामान्य जनों का भी बिम्ब होना चाहिए।

कविता का अनुवाद और चुनौतियां:

कविता के अनुवाद को लेकर बहुत ही विवाद रहे हैं, किसी ने कविता के अनुवाद को कालीन की संज्ञा दी है तो किसी ने कविता के अनुवाद को असंभव कहा है। कविता के अनुवाद के बारे में कुछ प्रमुख विद्वानों के विचार निम्न प्रकार हैं:
"All translation seems to me simply an attempt to solve an unsolved problem" Humboldt
"It is useless to record Greek in translation। Translators can built but offer us a vague equivalent" Virginia Wolf
"There is no such thing as translation" May
:The flowering moments of mind drop half their petal in speech and three forth in translation"

Nothing which is harmonized by the band of muses can be changed from one language to another without destroying its sweetness" Dante

Translation of a literary work as tasteless as a stewed strawberry" H de forest Smith

Translation is melding with inspiration" Showmen

Ideas can be translated but not the words and their associates" Sydney**2**

"काव्य कला पर शब्द क्रीडा का शासन चलता है और इसका शासन चाहे सीमित हो या निरंकुश; परिभाषा के अनुसार कविता का अनुवाद असंभव है. (रोमन याकोब्सन)**3**

कविता के अनुवाद में प्रश्न यही उठता है कि क्या कविता का अनुवाद संभव है? इसकी पहली प्रतिक्रिया तो यही है कि कविता का अनुवाद होता आया है और होता रहेगा। चूंकि कविता जो पहले देशज होती है वह अनुवाद के बाद वैश्विक हो जाती है। उसकी चिंता में पहले तो स्थानीय भाव ही होते हैं पर अनुवाद के बाद वह वैश्विक पटल पर आ जाने के लिए तैयार हो जाती है। उसमें वैश्विकता के लक्षण आ जाते हैं। कवि के व्यक्तिगत भाव व्यक्तिगत न रहकर पूरे विश्व की धरोहर बन जाते हैं, ब्रूटस का चरित्र सभी धोखेबाजों का पर्याय हो जाता है। तो शकुन्तला प्रेम का प्रतीक बन जाती है। ऐसे में अनुवाद कैसे मौलिक हो सकता है। कविता सार्वभौम, मात्र व्यक्तिगत और बाह्य की अपेक्षा आतंरिक और अभिव्यंजनात्मक होती है तो वह सौन्दर्य को अपने अन्दर से ही ग्रहण करती है। क्रोचे सौन्दर्यानुप्राणित कला सृजन में सहजज्ञान (सहजानुभूति) को प्राथमिकता देते हैं। उनके अनुसार अभिव्यक्ति ही स्वतंत्रता है। कला या काव्य अभिव्यक्ति का नाम हैं, और अभिव्यक्ति कला है या काव्य है, परन्तु साहित्य नहीं। काव्य का अर्थ है अभिव्यंजना। और अभिव्यंजना अद्वितीय होती है। अर्थात उसका दूसरा रूप नहीं हो सकता है। शकुन्तला, इलियाड, महाभारत, रामायण जिसके भी अनुवाद हुए हैं, वे अनुवाद न होकर दूसरी रचना है। नरेंद्र कोहली रचित महासमर महाभारत का एक नया रूप है।

कविता के अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या यही है कि उसे मौलिक सृजन नहीं माना जाता है। इसे दोयम दर्जे का काम माना जाता है। और इस दोयम दर्जे के काम में अनुवादक को तीन भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है। उसे भाषाविद, आलोचक और रचनाकार तीनों की भूमिका से होकर गुजरना होता है। भाषा की जमीन जलवायु के अनुसार वह बीज प्रतिरोपित करता है और रचनाकार के रूप में संवारता है, तभी वह अनूदित कृति के रूप में प्रस्फुटित होता है। वास्तव में सृजनात्मक अनुवाद सर्जनात्मक प्रक्रिया है जिसके अनुवाद स्रोत पाठ के मूल पाठ को लक्ष्य पाठ के सहपाठ के रूप में प्रतिबद्ध है ताकि वह अनूदित पाठ का प्रतिहास बन सके। इसी सन्दर्भ में प्रख्यात अनुवाद्शास्त्री फ्रॅास्ट ने साहित्यिक कृति के अनुवाद को विश्लेषण न कहकर एक प्रकार की व्याख्या कहा है। इस धारणा के अनुसार सच्ची कविता अनुवाद का प्रतिरोध करती है। और रॉबर्ट फ्रॅास्ट के बहाने से ही इस धारणा के समर्थक कहते हैं कि कविता का अनुवाद करते समय जो कुछ अनूदित नहीं हो पाता है वही कविता होती है।

वहीं कविता अपना रसायन जीवन की वस्तुपरकता से पाती है। जीवन का अर्थ केवल मानवीय जीवन न होकर बहुत कुछ छुए और अनछुए द्रश्य भी होते है, अर्थात उसमें चीज़ें, प्रकृति और ब्रह्माण्ड होती हैं जो जीवन से सम्बन्धित हैं। जीवन में कई चमत्कारिक भी ब्योरे होते हैं: कविता संसार की इस अद्भुत और निरंतर बढ़ती पदार्थमयता से ही अपने विशिष्ट संयोजन पाती और गढ़ती है। ऐसे में क्या अनुवादक इस विशिष्ट संयोजन को दूसरी भाषा में गढ़ने में सफल हो पाएगा? क्या वह उस विशिष्ट लय, ध्वनि और संयोजन को दूसरी भाषा में प्रकट कर पाएगा? गेटे ने एक बार कहा था "एक कलाकृति में कथ्य समझना सबसे आसान है, अर्थ अधिक कठिन है और शिल्प समझना सबसे कठिन है और सबसे कम उसे ग्रहण कर पाते हैं।" तो जब पाठक ही उसे ग्रहण नहीं कर पाते हैं, तो अनुवादक कैसे इस शिल्प को ग्रहण

2 . *http://www.k-international.com/blog/quotes-for-international-translation-day/*

3. *डॉ. रमण सिन्हा, अनुवाद और रचना का उत्तर जीवन,वाणी प्रकाशन 2002, पृ 66*

करेगा? कई बार विषय और अर्थ के बीच अंतर कई बार गहरा अंतराल होता है – यह अंतराल शिल्प पैदा करता है, इसी अन्तराल से एक रचनात्मक तनाव उत्पन्न होता है तो क्या अनुवादक इस तनाव को पकड़ पाता है? आखिर अनुवादक इस तनाव को अपने शब्दों में कैसे लाएगा?

अनुवाद को वाल्टर बेंजामिन ने साहित्य का परवर्ती जीवन कहा है, शायद उन्होंने यह बहुत ही सोच समझ कर कहा होगा क्योंकि कविता के अनुवाद में अनुवादक एक अनदेखे संसार का अनुवाद करता है। वह दैहिक अनुवाद न कर आत्मिक अनुवाद अधिक करता है।

कविता का अनुवाद कई प्रकार की जटिलताओं और अंतर्द्वंदों से भरा हुआ होता है। यह नवीनता लिए हुए भी होता है और पुरातनता भी। उसमें स्रोत भाषा के प्रति मैत्री भाव होता है। कविता के अनुवाद का अर्थ होता है दूसरे की ज़मीन की फसल को अपने यहाँ उगाना। उसे लक्ष्य भाषा की आबोहवा और जलवायु के अनुसार ही पल्लवित करना और उसे मूल रूप में रहने देते हुए नया रूप देना। यह करना कभी कभी अनुवादक के लिए बहुत ही जटिल हो जाता है। पर अनुवादक कविता के प्रभाव और स्वभाव दोनों का ही अनुवाद करने में सफल रहते हैं। अब कविता का अनुवाद दैहिक अनुकृति हो या आतंरिक प्रतिक्रिया, ये प्रश्न बहुत ही जटिल हैं। चूंकि कविता का अनुवाद स्थूलता से सूक्ष्मता की यात्रा होता है तो उसे सम्पूर्णता के प्रश्न को भी खुद में समाहित करना होता है। वह एकांगी नहीं होना चाहिए। काव्यानुवादक को भाषिक स्तर पर स्वछंदता और व्यंजना के स्तर पर एकनिष्ठता का आचरण करना चाहिए। उसे कृति की आत्मा को स्पर्श करना चाहिए। कविता के अनुवाद में कृति की यथातथ्यता को बनाए रखना बहुत ही आवश्यक होता है। कविता में शब्दों के आरपार कुछ खोजने की बेचैनी होती है, कभी कभी कथ्य कुछ नहीं या नहीं के बराबर होता है तो उस कथ्य को खोजने की उत्सुकता होती है। कविता के तेवर को समझना होता है। कविता के अनुवाद में प्रश्न कथ्य का नहीं होता है, वह मूल भाषा की पूर्ण कथन भंगिमा को अनुवाद में बाँधने जैसा होता है और यही अनुवादक की कसौटी होती है। कविता में जो गेयता होती है, उसका अनुवाद करने में अनुवादक को कठिनाई होती है।

काव्यानुवाद में वैसे तो कई प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं, पर कुछ कठिनाइयां निम्न हैं:

- स्रोत भाषा के शब्द बहुधा कुछ विशेष अर्थ लिए होते हैं और उनके लिए स्रोत भाषा में समतुल्य शब्द मिलना कठिन होता है। वे एक संस्कृति और सन्दर्भ को खुद में समेटे हुए होते हैं।
- अलंकार बिम्ब और प्रतीकों का अनुवाद
- छंदों और लय का अनुवाद
- सांस्कृतिक प्रसंगों और सन्दर्भों का अनुवाद
- मिथकों का अनुवाद
- कवि के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और उनकी शैली
- कोई भी रचना एक विशिष्ट मनोदशा और मनोस्थिति में ही लिखी जाती है, अत: उसकी इस मनोस्थिति को समझ पाना भी एक जटिल कार्य है।
- अगर तत्व की बात करे तो हर भाषा के अपने तत्व और सौन्दर्य होते हैं
- काव्य की अर्थ रचना भी इसे अनूद्य बना देती है

एक सफल अनुवादक वही होता है जो इन कठिनाइयों से परे पाकर कविता को लक्ष्य भाषा में ला सके। यह सफलता खैयाम की रुबाइयों के अनुवाद में परिलक्षित होती है, जिन्हें समय समय पर श्री हरिवंशराय बच्चन सहित कई कवियों ने किया है. इसी प्रकार पाब्लो नेरुदा की माचू पिच्चू के शिखर एवं शेक्सपियर के कई नाटकों में भी समतुल्यता का यह सफल स्तर दिखलाई देता है.